

पाठ—11 रहीम के दोहे कवि रहीमदास जी

रहीमदास जी के दोहे नीतिपरक दोहे हैं जो मनुष्य को सत्य, निष्ठा, प्रेम और अहिंसा के पथ पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

व्यवहार—कुशलता मानव मात्र के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है जो कि उसे कुशल नेता और सफल पथ—प्रदर्शक बनाती है।

विपत्ति के समय सहारा देने वाला ही सच्चा मित्र होता है। रहीमदास जी ने मित्रता के सही अर्थ को बताने के लिए सिर्फ कठिन समय को ही सबसे उत्तम बताया है।

मछली का पानी के प्रति विशेष मोह दिखाया है लेकिन जल अपने भीतर रहने वाले किसी भी जीव से कोई मोह नहीं रखता है। वह सिर्फ अपने कर्तव्य को पूरा करता है।

परोपकार की महत्ता का वर्णन वृक्षों का, सरोवर का उदाहरण देकर किया है। वृक्ष कभी अपने फल नहीं खाते और सरोवर कभी अपना पानी नहीं पीते।

निर्धन व्यक्तियों की तुलना क्वार के महीने में आकाश में छाने वाले जलहीन बादलों से की है जो सिर्फ गरजते हैं लेकिन बरसते नहीं है ठीक उन धनी लोगों की तरह जो निर्धनता आने पर भी अपना रौब जमाने के लिए थोथी बखानता करते हैं।

मनुष्य को धरती की भाँति सहनशील बनने की प्रेरणा दी है जिस प्रकार मनुष्य अपने शरीर को परिस्थिति के अनुकूल बना लेता है ठीक उसी प्रकार यह धरती भी सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि ऋतुओं के प्रभाव से प्रभावित नहीं होती वरन् हर परिस्थिति में समान व्यवहार करती है और सभी ऋतुओं का सम्मान करती है।